International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-06-2024, Accepted: 27-07-2024, Published: 13-08-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 31-33

छायावादी काव्य में प्रकृति का स्वरूप

विनय कुमार
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
इसके माध्यम से हम छायावाद उद्भव, काल एवम नामकरण के बारे में जान सकेंगे। यह छायावाद के प्रकृति चित्रण के संदर्भ में हमारी समझ को अत्यंत सरल एवम सुदृढ़ बनाएगा। यहां पर हम प्रकृति चित्रण के विविध रूपों एवम उनकी बारीकियों को देख सकते हैं। कवियों द्वारा प्रकृति के संदर्भ में की गई कल्पनाएं एवम उनके द्वारा उकेरे गए प्रकृति के मानवीय चित्रों को बहुत ही सहजता से अपने अंतर्मन की दृष्टि से देख सकेंगे।

मूल शब्दः छायावाद, प्रकृति, सौंदर्य, नदी, पेड़, पहाड़, झरने

प्रस्तावना
हिन्दी साहित्य में किसी भी काल या वाद की एक विशेषता होती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल विभाजन एवं नामकरण युग विशेष की प्रवृत्तियों या साहित्यकारों को आधार बनाकर किया गया है।
जैसे – आदिकाल या वीरगाथाकाल, भक्तिकाल या स्वर्णयुग, रीतिकाल या श्रृंगार काल, इसी प्रकार आधुनिक काल में भी नामकरण की रीति अपनाई गई। क्रमशः भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि।
आधुनिक काल में ही भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग की तरह काव्य की एक धारा छायावाद के रूप में विख्यात हुई। लगभग सन 1918–1936 ई तक के कालखंड को छायावाद के नाम से जाना जाता है। हिंदी साहित्य में सामन्यतः कोई भी वाद किसी न किसी के विरोध स्वरुप जन्म लेता है। छायावाद भी हिंदी में पुरानी कविता के विरोध में खड़ी हुई भावनात्मक एवं दार्शनिक अनुभूति की एक अवधारणा है, जहाँ लौकिक प्रेम के माध्यम से आलौकिक तथा आलौकिक प्रेम के माध्यम से लौकिक अनुभूतियों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है।

छायावाद में प्रकृति के विविध स्वरूप
छायावाद के लिए रोमांटिसिज़्म शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।
सामान्य तौर पर छायावादी काव्यधारा मुकुटधर पाण्डेय से प्रारम्भ होकर मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा एवं रामकुमार वर्मा तक पहुँचती है।
किन्तु मुख्य रूप से छायावादी कवियों में प्रसाद, पंत और निराला तथा महादेवी वर्मा ही हैं जिन्हें छायावाद के चार स्तम्भ भी कहा जाता है।
प्रकृति और प्रेम छायावाद का मुख्य विषय है जहाँ प्रकृति चित्रण की व्यापकता अधिक है यहाँ विभिन्न कवियों ने भिन्न भिन्न रूपों में प्रकृति को चित्रित किया है, प्रकृति के आलम्बन परक स्वरुप का चित्रण छायावादी कवियों की नवीन और मौलिक प्रवृत्ति है सुमित्रानंदन पंत और जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति के इस स्वरूप की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है।
यहाँ तक की पंत को प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में जाना जाता है निराला और महादेवी वर्मा को के यहाँ भी प्रकृति अपने विभिन्न रंगों को विखेरती विविध रूप में चहलकदमी करती दिखाई पड़ती है।
मुकुटधर पाण्डेय जी से छायावाद का आरम्भ माना जाता है उन्हें छत्तीसगढ़ी माटी से विशेष प्रेम था साथ ही वे काव्य के सहज़ एवं सरल रूप के विशेष अनुरागी थे। उन्हें प्रकृति सौंदर्य, नदी, पहाड़, पशु, पक्षी आदि से लगाव था जिसका चित्र उनकी महानदी नामक कविता में देखा जा सकता है–

कितना सुन्दर और मनोहर महानदी यह तेरा रूप।
कलकल मय निर्मल जल धारा लहरों की है छटा अनूप ।।
तुझे देखकर शैशव की स्मृतियों उर में उठती जाग।
लेता है कैशोर काल का अंगड़ाई अल्हड़ अनुराग ।।

ग्राम्य जीवन का चित्रण करते हुए कवि ने पनघट और पनिहारिनों के चित्र को उकेरा है। उनके ग्रामीण जीवन की सहज़ अभिव्यक्ति यहाँ इस प्रकार है।

पनिहारिन पानी लेने को,
पंक्ति बाँधकर जाती हैं।
सिर पर नीर पूर्ण मिट्टी के,
कलसे ले–ले आती हैं।।

कविवर मैथिलिसरण गुप्त ने भी प्रकृति को चित्रित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने पंचवटी का अत्यंत मुग्धमयी चित्रण किया है चांदनी पवन, धरती की हरियाली गोदावरी के तट की सुंदरता आदि का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है जो की इस प्रकार है–

चारुचंद्र की चंचल किरणें, खेल रहीं हैं, जल थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अम्बरतल में ।
पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से,
मानों झूम रहे हैं तरु भी, मन्द पवन के झोंकों सें।।

गोदावरी तट का चित्र –
गोदावरी नदी का तट यह,
ताल दे रहा है अब भी ।
चंचल जल कल – कल भागे,
तान दे रहा है अब भी ।

छायावादी युग को हिंदी कविता के प्रकृति चित्रण के काव्य का स्वर्ण युग कहा जाता है और सुमित्रानंदन पंत को उस युग का सुकुमार कवि । पंत जी ने प्रकृति का ऐसा स्वरूप गढ़ा है जैसे लगता है कि प्रकृति और पंत एक ही हैं न की अलग – अलग। पंत जी का प्रथम विषय है प्रकृति अन्य विषय उनके लिए गौंण है वे प्राकृतिक सौंदर्य को प्राथमिकता देते हुए कहते हैं कि

छोड़ द्रुमो की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया।
काले तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दूं लोचन।

पंत जी ने प्रकृति चित्रण के अंतर्गत प्रकृति के विविध उपादानों को चित्रित करने का अत्यंत सफल प्रयास किया है इनके काव्य में प्रकृति का आलम्बन रूप अत्यंत प्रभावी है जिसके उदहारण परिवर्तन, गुंजन, एकतारा, हिमाद्रि, बादल आदि हैं।
प्रथम रश्मि आदि में दृष्टव्य हैं। प्रथम रश्मि का एक उदाहरण इस प्रकार दृष्टव्य है–

प्रथम रश्मि का आना रंगिनि
तूने कैसे पहचाना?
कहां–कहां है बाला बिहंगिनि
पाया तूने यह गाना?
सोई थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छुपकर
ऊंघ रहे थे, झूम द्वार पर
प्रहरी से जुगनू नाना
शशि किरणों के उतर–उतर कर
भू पर काम रुप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिखा रहे थे मुस्काना
स्नेह हीन तारों के दीपक
स्वास – शून्य थे तरु के पात
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में
तम ने था मंडप ताना।

प्रकृति का मानव जीवन के साथ अमिट संबंध रहा है। यह बात पंत जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्पष्ट की है। पंत जी ने पल्लव में बादलों के सौंदर्य का अत्यंत मनोरम चित्र उकेरा है–

बादलों के छायामय मेल
घूमते हैं आंखों में फैल
अवनि और अंबर के खेल
शैल में जलद –जलद शैल
शिखर पर विचर मारूत रखवाल
वेणु में भरता था जन स्वर
मेमनों से मेघों के बाल
कुदकते थे प्रमुदित गिरि पर

पंत जी ने प्रकृति के संवेदनात्मक रुप का भी चित्रण किया है। सृष्टि की अविरलता देखकर वायु आहें भर रही है, आकाश आंसू बहा रहा है। आगे उन्होंने समुद्र और तारों की भी संवेदना को अपनी पंक्तियों में पिरो दिया है–

खोलता इधर जन्म लोचन
मूंदती उधर मृत्यु छण – छण
अभी उत्सव औ हास हुलास
अभी अवसाद, अश्रु उच्छवास
अचिरता देखा जगत की आप
शून्य भरता समीर निश्वास
डालता पातों पर चुपचाप
ओस के आंसू नीलाकाश
सिसक उठता समुद्र का मन
सिहर उठते उडुगन।

जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति विविध रूपों में विद्यमान है किन्तु प्रकृति का मानवीकरण प्रसाद काव्य की एक प्रमुख विशिष्टता रही है। झरना आंसू लहर, कामायनी इसका जीता जागता प्रमाण है जहां इनकी कल्पनाशक्ति के माध्यम से प्रकृति दौड़ती, बोलती, हंसती, इठलाती एवं विश्राम करती दृष्टिगत होती है। प्रसाद जी ने सागर, झरने व नदियों के सौंदर्य को अपने यहां विशिष्ट स्थान दिया है–

ले चल वहां भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे–धीरे
जिस निर्जन में सागर लहरी
अंबर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कथा कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे ।

कामायनी में प्रसाद जी द्वारा चित्रित उषा, सांध्य, दिवस, रात्रि, आकाश, पवन, वन, पर्वत आदि के अनेक चित्र दिखाई देते हैं प्रकृति के उपमान रूप का चित्रण कवि ने कामायनी में श्रद्धा के रूप सौंदर्य के माध्यम से किया है–

नील परिधान बीच सुकुमार,
खिल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
मेघवन बीच गुलाबी रंग।

प्रसाद जी ने पर्वतीय सौंदर्य मुख्य रूप से हिमालयी प्रकृति के प्रति अपने प्रेम को प्रकट किया है–

नव कोमल आलोक विखरता
हिम संसृति पर भर अनुराग
सित सरोज पर क्रीड़ा करता
जैसे मधुमय पिक पराग।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने प्रकृति के कोमल तथा कठोर दोनों पक्षों का चित्रण किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो उनका बादल क्रांति का प्रतीक हो–

गरजो, हे मंद्र व्रज स्वर,
थर्राए भूधर – भूधर ।
झर–झर–झर–झर धारा झर,
पल्लव – पल्लव पर जीवन।

इन्होंने प्रकृति के नवीन रूपों का भी चित्रण किया है। सांध्य काल के समय सुंदरी को बहुत धीरे – धीरे उतारते हैं, जिसमें चंचलता का तनिक भी आभास नहीं है–

दिवसवसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या – सुंदरी परी सी
धीरे – धीरे – धीरे ।

महादेवी वर्मा जी का चित्त प्रकृति के उद्दीपन में खूब रमा है साथ ही साथ विरह और मिलन प्रकृति के दोनों ही स्थितियां उनको अत्यंत मनोरम लगती हैं–

प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन,
इच्छाओं के सोने से शर
किरणों से द्रुत झीने सुन्दर

सूने असीम नभ में चुभकर
बन – बन जाते नक्षत्र – सुमन।
इसी भांति –
बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ!
नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ,
फूल को उर में छिपाये विकल बुलबुल हूँ,
नील घन भी हूँ सुनहली दामिनी भी हूँ!

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन एवं विश्लेषण के उपरांत हम कह सकते हैं कि छायावाद की विभिन्न विशेषताएं रही हैं किन्तु प्रकृति चित्रण उन सभी में मुख्य एवं प्रभावी रही, विभिन्न छायावादी कवियों ने अपनी अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से प्रकृति के विविध रूपों – जल, गगन, सूर्य, चंद्र, तारे आदि के चित्रित करने का अत्यंत सफल एवं सुन्दर प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृत्तियां, डॉ शिव कुमार शर्मा।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
3. काव्य और कला तथा अन्य निबंध, जयशंकर प्रसाद।
4. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, महादेवी वर्मा।
5. आस्था के चरण, डॉ नगेंद्र।
6. पंडित मुकुटधर पांडेय चयनिका, प्रो दिनेश पांडेय, डॉ बिहारी लाल साहू।